श्री मथुरादास त्रिकमजी

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक २१

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २१ जुलाओी, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

शिवरामपल्लीमें विनोबा

६

शिवरामपल्लीके सर्वोदय-संमेलनमें भिन्न-भिन्न प्रांतोंके कार्यकर्ताओंके साथ विनोबाकी बहुत महत्त्वपूर्ण चर्चाएं हुओी। अलग-अलग समय पर अलग-अलग लोगोंके सामने जो विचार रखे गये, अुन सबका संकलित सार यहां देनेका विचार है।

(१) ता० ८ अप्रैल, सुबह — आसाम, अुड़ीसा और बंगालके कार्यकर्ताओंसे बातचीत विनोबाने ही शुरू की: "आप लोगोंसे मिलकर मुझे खुशी हो रही है। श्री गोपबाबूने अिस तरह प्रांत-वार कार्यकर्ताओंसे मिलनेकी व्यवस्था की, यह अच्छा है। बाह्य परिचय बढ़ानेका मेरा स्वभाव नहीं है, किन्तु जेलमें जाने पर मेरा तरीका बदल गया और वहां हर साथी मेरे निजी परिचयमें आ गया। सर्वोदयके कामके लिअे अब हमें कार्यकर्ताओंसे परिचय बढ़ानेकी आवश्यकता है, और अगर हर तहसीलमें अेक कार्यकर्ता भी हमें अैसा मिल जाय, जिसके जरिये हम सर्वोदयका काम बढ़ा सकें, तो ढाओी हजार कार्यकर्ताओंके साथ परिचय बढ़ानेकी आवश्यकता है।

"हिंसक सेनामें सेनापति हुक्म देता है, पर सब सैनिकोंको वह जानता ही नहीं। यहां हुक्मका सवाल ही नहीं है। कार्यकर्ताओंको केवल सलाह देनेका ही सवाल है। परंतु अिसके लिअे भी परिचय होना आवश्यक है। फिर भी यह असंभव है कि अितनी थोड़ी देरमें मैं सबका शारीरिक परिचय पा सकूं। परंतु नाम-रूपका परिचय न भी पा सका, तो हार्दिक परिचय तो है ही। अिसलिअे आप लोग मुझसे निस्संकोच पूछियेगा।

"यह सही है कि मैं लोगोंसे कम परिचयमें आया हूं। संकोचवश मैंने परिचय नहीं बढ़ाया, अैसी बात नहीं है। संकोच तो है ही नहीं। जहां गया वहां अपना ही रूप पाया। फिर संकोच किससे और कैसा? पर मेरा परिचयका अर्थ ही शारीरिकके बजाय हार्दिक परिचयसे है। हार्दिक परिचयको ही मैं अधिक मानता हूं। अिसका अनुभव मुझे अिस बार जेलमें अच्छा आया। हमें केवल रिश्तेदारोंको पत्र लिखनेकी अिजाजत थी। मैंने पहिला पत्र बापूके नाम ही लिखा। वह अुनके पास नहीं भेजा गया। मैंने दूसरा पत्र सरकारको लिखा कि 'रक्त-संबंधसे भाओी-बहन कहलानेवाले मेरे कोओी नहीं हैं, अैसा नहीं। पर मैंने अुस तरह कभी सोचा ही नहीं। दूसरे लोग भी मेरे लिअे भाओी-बहन ही हैं। फिर यहां तो पत्र भेजनेवाला भी कैदी है, और पानेवाला भी कैदी है।' सरकारने जवाब दिया: 'आपकी भूमिका ठीक है, पर कानूनकी दृष्टिसे हम मनुष्य मनुष्यके बीच भेद-भाव नहीं कर सकते।' गीताके समत्वयोगका आधार ही मानो अुन्हें मिल गया।

"लेकिन हमने देखा कि तीन साल किसीको पत्र न लिखनेके बावजूद जब जेलके बाहर आये, तो सब ओर प्रेम-भाव शतगुणित बढ़ा हुआ पाया। अिसलिअे यह नहीं मानना चाहिये कि शारीरिक परिचय ही मुख्य है।"

प्रास्ताविक भाषणके रूपमें अुपरोक्त विचार प्रकट करने पर विनोबाने प्रश्न आदि कुछ पूछना हो तो पूछनेके लिअे कहा।

अुड़ीसाके अेक मित्रने विनोबाजीको अुड़ीसा आनेका आग्रह किया।

विनोबा: "हां, मेरे लिअे तो 'सर्वाः सुखमया दिशाः' — कहीं कोओी रुकावट या बंधन नहीं है। फिलहाल बारिश तक तो वर्धा पहुंचनेका अिरादा है। आगे मौके-मौके पर बाहर जानेका अवसर भी आयेगा। अुस समय अुड़ीसा भी आअूंगा। किसी कारण न आ सका, तो भी आप मुझे दूर न समझें। लोगोंके मना करनेके बावजूद मैंने आपकी भाषा सीखी, आपका साहित्य भी पढ़ा। हिन्दुस्तानकी सभी भाषाअें छोटी-छोटी हैं। अनमें आपसमें विशेष फर्क भी नहीं है। परंतु मैंने साहित्यका ज्ञान पानेकी दृष्टिसे नहीं, केवल प्रेमभाव बढ़ानेकी दृष्टिसे ही अुड़िया सीखी। थोड़ी-सी तेलगू मैं जानता हूं। परंतु मैं देख रहा हूं कि अुतनेसे ही लोगोंको मेरे बारमें कितना आत्मभाव लगता है। आपकी लिपिमें मैंने कुछ सुधार भी सुझाये हैं और कुछ सुधार आपने मंजूर भी किये हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप अपनी लिपिमें वे सुधार जरूर चलायें। आपके यहां संयुक्त अक्षरोंके लिखनेमें कितनी मुसीबत पड़ती है। बंगलासे कम मुसीबत नहीं है। संयुक्त अक्षर कहीं नीचे जोड़े जाते हैं, कहीं अूपर। अेक ही अक्षर भिन्न-भिन्न रीतिसे लिखा जाता है। सुधारकी आवश्यकता तो तेलगूमें भी है, परंतु बंगला और अुड़ियासे कम।"

आसामके भाओीके अेक प्रश्नका जवाब देते हुअे कहा:

"अेक जमाना था, जब सरहदी सूबा N. W. F. ही समझा जाता था। परंतु आज आसामको भी सीमाप्रांतका महत्त्व प्राप्त हुआ है। अिन सीमाओं पर आजकल रक्षणकी दृष्टिसे हिंसक तैयारियां चल रही हैं। लेकिन अगर हम अहिंसाके प्रतीक बन जायं, तो ये ही सीमाअें बंधु-भावके प्रचारका साधन बन सकती हैं। अगर हिंसाके प्रतीक बने रहे, तो सुरक्षाकी दृष्टिसे अिनका महत्त्व है। किसी भी दृष्टिसे आसामकी अुपेक्षा नहीं की जा सकती।

"हमने सर्वोदय-मेलेके अवसर पर गुंडी-समर्पणका जो कार्यक्रम दिया है, अुस पर अगर अमल किया जाय और अगर हम दस हजार लोग भी गुंडी देनेवाले निकल आयें, तो अिन दस हजार मित्रोंके जरिये आसाममें काफी काम किया जा सकता है। सर्व-सेवा-संघवालोंका काम है कि वे अुन तमाम गुंडी देनेवालोंसे परिचय

www.vinoba.in

प्राप्त करें। यह छोटे मुंह बड़ी बात मालूम हो सकती है, परंतु भगवानकी यदि अिच्छा हो कि छोटे औजारोंसे बड़ा कांम लिया जाय, तो वह अैसा कर सकता है। सर्व-सेवा-संघ छोटी चीज है, परन्तु वह गांधीजीकी जगह मूर्तिकी स्थान-पूर्ति करता है। अगर हम अुसे शिरोधार्य करें और अुसका सुनें, तो हमारा काम बढ़ सकता है। सर्व-सेवा-संघ आपके जरिये काम करेगा, तो अुसका भी काम होगा कि वह आपके गुणोंसे गुणी बने, और आपके दोषोंकी सजा भी भुगते। अुसकी सलाह दस बार ठुकराअी जाने पर भी ग्यारहवीं बार सलाह देना अुसका काम ही है। अुसकी सलाह न माननेकी कोअी शिकायत वह नहीं कर सकता। आपके हृदयके साथ संबंध रखनेवाला और आपके गुण-दोषोंको अपने समझनेवाला आज सर्व-सेवा-संघ ही है।"

(२) ता०८-४-'५१ की शामको बिहारके भाअियोंके साथ :

"आप लोगोंके यहां आगामी चुनावमें वोट देनेके सिलसिलेमें कुछ विचार चल रहा है। भारत सरकारसे कुछ बातों पर हमारा मतभेद है यह सही है, लेकिन वह मतभेद अुनकी विदेश नीतिके बारेमें नहीं, स्वदेश नीतिके बारेमें है।

"हम गांधीवादी कहलाते हैं, अिसलिअे चुनावमें हिस्सा न लें, यह ठीक नहीं प्रतीत होता। चुनावमें वही हिस्सा न ले, जो कभी कोर्ट-कचहरीका सहारा नहीं लेता हो, अपना सारा घर लुट जाने पर भी अदालतमें न जाता हो। जिसका व्यक्तिगत जीवन अैसा है, वह चाहे तो चुनावसे अलग रह सकता है। अर्थात् वह यह मानता है कि सरकारसे जो विशेषाधिकार हमें प्राप्त हैं, अुनका हम अुपयोग नहीं करेंगे।

"हमें लोगोंको परावृत्त नहीं करना चाहिये कि वे चुनावमें हिस्सा न लें। अपने ही तक चाहे तो व्यक्तिगत राय योग्य आदमीको दें। चुनाव सार्वजनिक वस्तु है। अुसका बहिष्कार करनेकी शक्ति अुस मनुष्यमें नहीं, जो अपने निजके या संस्थाके कामके लिअे सरकारकी शरण लेता हो।"

प्रश्न: क्या आगामी चुनावमें सर्वोदय-विचारवाले लोगोंको अधिकसे अधिक संख्यामें भेजा जाय?

अुत्तर: मान लीजिये कि आपने मुझे भेज दिया। तो आवश्यकता पड़ने पर दंड-शक्तिका अुपयोग मुझे करना होगा और अुसके लिअे पुलिसको भेजना होगा। लेकिन जो व्यक्ति दंड-व्यवस्थाको ही मान्य नहीं करता, वह चुनावमें कैसे खड़ा रह सकता है? किंतु जो अहिंसाको अिस हद तक नहीं मानता हो, किंतु अहिंसाको अपना ध्रुव समझकर अुस दिशामें आगे बढ़नेके लिअे प्रयत्नशील हो, अुसे चुनावमें भेजनेमें कोअी हर्ज नहीं।

प्रश्न: जमीनका बंटवारा कर देने पर अधिक अुत्पादनमें सफलता मिल सकेगी?

अुत्तर: यह खयाल कुछ अधूरा है। यह नहीं हो सकता कि जमीन जैसी चीज थोड़े लोगोंके हाथमें रखी जाय। लेकिन यह भी गलत है कि बिना बंटवारेके अुत्पादन बढ़ नहीं सकता। हां, आप यह कह सकते हैं कि अपनी मालिकीकी जमीन ज्यादा रहे बिना काम करनेवालेको अुत्साह नहीं मालूम होगा। परंतु अनुभव तो यह बताता है कि जिनके पास थोड़ी खेती है, वे अधिकसे अधिक अच्छी खेती करते हैं। बड़ी खेतीके खिलाफ छोटी खेती-वालोंकी यह दलील है। मेरा तो यह खयाल है कि खुली हवा और पानीकी तरह जमीनका हकदार भी हरअेक व्यक्ति है। जो मांगेगा, अुसे सरकार कहेगी कि तेरी तकदीरमें ५ अेकड़ जमीन है। आजके शहरोंको हटाकर देहातोंको ठीक बसाना होगा और सबको खेती करनेके लिअे कहना होगा।

प्रश्न: लेकिन जमीन कैसे दिलाअियेगा?

अुत्तर: कानूनसे। वह काम आसान है।

प्रश्न: अनुभव यह हुआ है कि कानूनसे यह चीज नहीं हो रही है। कानून बनाना ही कठिन हो रहा है। (प्रश्नकारका अिशारा यह था कि सत्ता प्राप्त करके मंत्रि-मंडल ढीले हो गये हैं।)

अुत्तर: वह तो कुर्सीका गुण है। बिन्दुकी व्याख्या करते समय प्रोफेसर कहता है कि अुसकी न लंबाअी है, न चौड़ाअी। लेकिन जब बिन्दुका दर्शन कराता है, तो ५० विद्यार्थियोंको कैसे दिखेगा, अिसका खयाल रखकर वह बिन्दु बनाता है। मैं जानता हूं कि कानून बनानेमें अनेक झगड़े हैं। अिसका मुख्य सबब सुरक्षितता है। आज हमें सारी शक्ति फौज और सुरक्षाके लिअे खर्च करनी पड़ती है। अिसलिअे दूसरे कामोंके लिअे साधन ही नहीं रहे। जब तक यह हल नहीं निकलता कि हमें अितनी सेना नहीं चाहिये, हम कमसे कम सेनासे काम चला लेंगे, तब तक शांति कायम नहीं हो सकती। और यह तब होगा जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान आपसमें यह तय करेंगे कि हमें लड़ना नहीं है।

प्रश्न: जिनके पास १०-१० हजार अेकड़ जमीन है, अुनसे वह कैसे ली जाय? अुसको तकसीम कैसे किया जाय?

अुत्तर: काश्मीरने क्या किया? अगर वहां हो सकता है, तो यहां क्यों नहीं हो सकता?

प्रश्न: खादीके संबंधमें आजकी परिस्थितिमें आपका मार्ग-दर्शन चाहिये। अुसे वस्त्र-स्वावलंबनकी दृष्टिसे चलाना है या मजदूरी दिलानेवाले अुद्योगके तौर पर?

अुत्तर: हमसे जब कोअी पूछता है कि खादीसे मजदूरी कितनी मिलती है, तो हम कहते हैं कि चरखा-संघ पागल है, जो मजदूरी देता रहता है। हम तो समझ नहीं सकते कि कातनेसे पेट कैसे भरेगा? पेट तो बोनेसे भरेगा, कातनेसे कपड़ा ही बनेगा। (विनोबाकी सूचना यह है कि कताअी-कामकी पैसेके रूपमें कीमत आंकनेका खयाल ही गलत है। करोड़ों लोगोंके लिअे जिस तरह अपनी जमीन जोतकर अन्न पैदा करना अनिवार्य है, अुसी तरह कातना भी अनिवार्य है।)

प्रश्न: आवश्यकता पड़ने पर सत्याग्रह करनेके संबंधमें आपकी क्या राय है?

अुत्तर: सत्याग्रहका मौका आज केवल नैतिक मामलोंमें ही खड़ा हो सकता है। जहां अपनी हुकूमत है, अपना कानून है, वहां कानूनकी सहायतासे ही सब मसले हल होने चाहियें।

प्रश्न: सर्व-सेवा-संघवाले चुनावमें क्यों न खड़े रहें?

अुत्तर: अुन्हें कौन चुनेगा? मैं अगर खड़ा रहूं, तो लोगोंसे कहूंगा कि फौज नहीं रखनी चाहिये। तब बताअिये मुझे कौन चुनेगा? मेरी नसीहतें मानना अलग बात है। मेरे कहनेसे लोग सवेरे ४ बजे जाग भी सकते हैं। परन्तु मुझे चुनकर खतरा कौन अुठायेगा? यदि चुनावमें खड़ा रहूं, तो मुझे तो बुरी तरह हारना होगा।

दा० मूं०

सरदार वल्लभभाअी

[पहला भाग]

लेखक—**नरहरि परीख**

अनु०—**रामनारायण चौधरी**

कीमत ६-०-० डाकखर्च ०-१३-०

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

चरखा-संघके कुछ निर्णय

ता० ६ और ७ अप्रैल १९५१ को हैदराबादमें चरखा-संघके ट्रस्टी मंडलकी सभा हुअी थी। अुसमें जो निर्णय हुअे थे, अुनमें से कुछ, जो खादी-प्रेमियोंकी जानकारीके लायक हैं, नीचे दिये जाते हैं:

१. अन्य प्रान्तोंकी तरह केरल शाखाके भी तीन विभाग किये गये और अुनके संचालक मुकर्रर किये गये। शाखाके मंत्री श्री श्रीनिवासनजीके मंत्रीपदका पांच सालका कार्यकाल जल्दी ही समाप्त होनेवाला है। अुसके बारेमें विचार होकर तय हुआ कि शाखाके विभाग कर देनेकी दशामें अभी नया मंत्री नियुक्त करनेकी जरूरत नहीं है। श्री श्रीनिवासनजीको चरखा-संघके दफ्तरकी ओरसे प्रधान मंत्रीके काममें सहायता देनेके लिअे सहायक मंत्री नियुक्त किया गया। अब तक चरखा-संघमें अिस प्रकारके सहायक मंत्री नहीं रहते थे, पर अब प्रधान मंत्रीके कामका बोझ हलका करनेकी दृष्टिसे अैसे सहायकोंकी जरूरत है। और भी अिस कामके लायक व्यक्ति मिलने पर अुनकी सहायक मंत्रीके तौर पर नियुक्ति की जायगी।

२. श्री गांधी-स्मारक-निधिकी ओरसे चरखा-संघको पूछा गया था कि निधिकी ओरसे वस्त्रस्वावलंबनके काममें किस तरह मदद दी जाय? निश्चय हुआ कि वस्त्रस्वावलंबनमें सबसे अधिक कठिन समस्या बुनाअी की है, अिसलिअे निधिको सलाह दी जाय कि वह यथासंभव बुनाअीकी समस्या हल करनेमें होनेवाले विविध प्रकारके खर्चमें मदद करे।

३. चरखा-संघ बना था, तब प्रारंभमें भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें अुसका काम करनेके लिअे प्रतिनिधियों (अेजन्टों) की नियुक्ति की गयी थी। शुरुआतमें काम अुनके द्वारा ही प्रारंभ हुआ। तभीसे तथा बादमें धीरे-धीरे प्रान्तोंमें पूरे समय काम करनेवाले मंत्री भी मुकर्रर किये गये और कामका भार मंत्रियों पर पड़ा। आगे चलकर कहीं-कहीं प्रतिनिधियोंने अपना प्रतिनिधिपद छोड़ दिया। अेकाध रिक्त स्थान पर नया प्रतिनिधि मुकर्रर किया गया। बाकीके स्थान वैसे ही खाली रहे। अिस प्रकार अब केवल दो ही प्रान्तोंमें दो प्रतिनिधि रह गये थे। अिसके अलावा चरखा-संघके विधानमें प्रतिनिधि रखनेके बारेमें कोअी धारा नहीं है। सारी परिस्थितिका विचार करके सर्वसंमतिसे तय हुआ कि अब प्रान्तीय प्रतिनिधि (अेजन्ट) की पद्धति बंद कर दी जाय। अिसके साथ यह भी तय हुआ कि संघके ट्रस्टी व्यक्तिशः अलग-अलग क्षेत्रोंमें संघके कामके प्रचार और मार्गदर्शनके कार्यका जिम्मा लें।

४. पाठकोंको स्मरण होगा कि कुछ समय पहले जब कांग्रेसके विधानमें परिवर्तन हुआ था, तब अुसके विशेष सभासदोंके लिअे जो खादी पहननेकी शर्त थी, अुसमें केवल खादी शब्द ही लिखा गया था, प्रमाणित खादी शब्द नहीं था। बादमें अुसकी दुरुस्ती होकर प्रमाणित शब्द डाला गया। किसके द्वारा प्रमाणित, अिसकी व्याख्या कांग्रेस कार्य-समितिने की, जिसमें चरखा-संघके अलावा कुछ दूसरोंके द्वारा भी खादी प्रमाणित करनेकी गुंजाअिश रखी गअी। अिसके परिणामस्वरूप खादीकी शुद्धतामें आघात पहुंचना अवश्यंभावी था। अब फिर कांग्रेसके विधानमें परिवर्तन हुआ है, जिसमें प्रमाणित शब्द फिरसे हटा दिया गया है। यह जो कुछ भी हुआ सो सोच-समझकर ही अखिरी निर्णय हुआ है, अैसा मानना चाहिये। तथापि चरखा-संघके मंत्रीजीने कांग्रेसके अध्यक्ष महोदयसे निवेदन किया था कि वे अिस बारेमें कांग्रेसकी नीतिका स्पष्टीकरण करें, और पूछा था कि क्या अब यह समझ लिया जाय कि कांग्रेसके विशेष सदस्योंके लिअे कहींसे भी खरीदी हुअी खादी चल सकती है। अिसका अब तक कांग्रेससे कोअी अुत्तर नहीं मिला है। चरखा-संघकी सभामें अिस विषयका विचार किया गया। सबकी यही राय रही कि खादीके बारेमें प्रमाणित शब्द हटा देनेसे खादीकी शुद्धतामें आघात पहुंचता है और भविष्यमें भी पहुंचेगा। खादीका अर्थ प्रमाणित खादी और वह भी चरखा-संघ द्वारा ही प्रमाणित, अैसा होना चाहिये। कांग्रेसका यह कदम खादीके हितके खिलाफ है। अिसलिअे चरखा-संघने कांग्रेससे प्रार्थना की है कि वह कांग्रेसके विधानमें खादीके साथ 'अ० भा० चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित' शब्द जरूर रखे।

५. अेक समय प्रायः हरअेक प्रान्तमें अेक अेक खादी-विद्यालय था। योग्य संचालक और आचार्य न मिलनेके कारण अब केवल चरखा-संघकी ओरसे दो ही विद्यालय चल रहे हैं। अिस परिस्थितिका विचार करके तय हुआ कि फिरसे हरअेक प्रान्तमें खादी-विद्यालय चलानेकी कोशिश की जाय और अुसमें यथासंभव समग्र ग्रामसेवाकी दृष्टिसे भी कुछ अभ्यासक्रम रखा जाय। प्राथमिक सेवा प्रवेशकी अेक परीक्षा अैसी रखी जाय, जिसका लाभ रचनात्मक कामके हर क्षेत्रमें काम करनेवाले सेवकको मिल सके।

६. प्रमाणित संस्थाओंके खादी-काम करनेमें अेक बड़ी अड़चन अुनकी पूंजीकी कमी है। अिस समय चंदा करना मुश्किल हो रहा है। कर्ज लें तो काम घटाय बिना वह कैसे लौटाया जा सकेगा? चरखा-संघके नियमोंके अनुसार वे पूंजी बढ़ानेके लिअे मुनाफा नहीं कर सकतीं। अिसलिअे यह महसूस किया गया कि अुनकी पूंजी बढ़ानेके लिअे कुछ कारगर व्यवस्था होनी चाहिये। अिसके दो तरीके सोचे गये हैं: अेक ग्राहकों पर कुछ बोझ डालकर और दूसरा सरकारोंसे मदद लेकर।

यह व्यवस्था फिलहाल तीन वर्षोंके लिअे ही सोची गअी है। अिसका लाभ कुछ कमजोर परन्तु योग्य प्रमाणित संस्थाओंको ही दिया जा सकेगा।

(अ) अभी जो प्रमाणित संस्था खादीका काम करती है, अुसमें अुसके खादी-कामके खर्चके लिअे व्यवस्था-खर्च अुतना ही मंजूर किया जाता है, जिसमें अुसको हानि या लाभ न हो। अिस मुकर्रर की हुअी मर्यादामें अगर किफायतसे बचत हो जाय, तो वह अुस संस्थाकी रह जाती है, और पूंजी बढ़ानेमें अुपयोगी हो सकती है। पर अुस मर्यादासे अधिक खर्च हो, तो अुसकी हानि अुस संस्था पर पड़ती है। यह व्यवस्था जैसी है वैसी ही रहेगी। पर अिसके अुपरांत यह हो कि संस्थाकी फुटकर बिक्री पर अुसे रुपये पीछे आधा आना अधिक लिया जाने दिया जाय। अगर संस्था अपना काम ठीक किफायतसे करेगी, तो अिस आधे आनेका अुपयोग अुसकी पूंजी बढ़ानेमें होगा। अिस तरहसे धीरे-धीरे वह अपने कामके हिसाबसे अपनी पूंजी बढ़ा सकेगी। अिस रकमका बोझ ग्राहकों पर पड़ेगा, क्योंकि माल अुतना महंगा बेचना पड़ेगा।

(आ) फिलहाल तो यही दीखता है कि सरकारोंका खादी-काममें पड़नेका अुद्देश्य केवल गरीब और बेकार देहातियोंको कुछ काम देना अर्थात् अुन्हें कुछ आमदनीका जरिया देना है। अतः सरकारोंकी आर्थिक मददमें यही दृष्टि रह सकती है कि खादी-कामके द्वारा गरीब देहातियोंके पास कितना पैसा पहुंचा। अिसलिअे चरखा-संघकी सरकारोंसे सूचना है कि वे चरखा-संघ द्वारा सिफारिश की गयी प्रमाणित संस्थाओंको अुनकी कत्तिनों, धुनियों और बुनकरोंमें बांटी गयी मजदूरी पर चार प्रतिशत 'सब-सीडी' के रूपमें मदद दें। जहां सरकारने संस्थाको कर्ज दिया हो, वहां यह 'सबसीडी' की रकम कर्जकी अदायगीमें लगे। सरकारें अैसी संस्थाओंको मदद किन शर्तों पर दें, अिसके नियमोंका भी अेक मसविदा चरखा-संघने बनाया है।

मंत्री
अ० भा० चरखा-संघ

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
२१ जुलाअी १९५१

श्री मथुरादास त्रिकमजी

गत शुक्रवार, ता० ६ जुलाअी, १९५१ के दिन बम्बअीमें श्री मथुरादास त्रिकमजीका देहान्त हो गया। श्री मथुरादासभाअीकी नानी गांधीजीकी सौतेली बहिन थीं। परन्तु रिश्ता महत्त्वकी बात नहीं। अुसकी सार्थकता अितनी ही है कि अुस निमित्तसे वे गांधीजीके निकट समागममें आसानीसे आ सके। गांधीजी जब सन् १९१५ में दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तान आये, तो सार्वजनिक जीवनमें अुनके सबसे पहले अनुयायी और सहायक मथुरादासभाअी ही हुअे। महादेवभाअीने तो गांधीजीका मंत्री-पद सन् '१७ में संभाला। कहा जा सकता है कि तब तक वह काम प्रायः श्री मथुरादासभाअी (और स्वर्गीय श्री जमनादास गांधी) ही करते थे। गांधीजी और मथुरादासभाअी दोनोंकी अिच्छा यही थी कि मगनलालभाअी गांधी आदिकी तरह वे भी गांधीजीके साथी बन जायं। लेकिन मथुरादासभाअीकी परिस्थितियां अिसके अनुकूल नहीं थीं, अिसलिअे अैसा नहीं हो सका; और अिस बातका अुन्हें हमेशा खेद रहा। अपने काममें वे बहुत ही व्यवस्थित थे, अिसलिअे गांधीजीके साथ अुनका पूरी तरह शरीक न हो सकना गांधीजीके कार्योंमें अेक कमी रह जाने जैसा हुआ। लेकिन दूर रहते हुअे भी वे गांधीजीके जीवनके हर पहलूका और अुनकी सारी प्रवृत्तियोंका परिचय रखते थे, अुन पर बारीकीसे विचार करते थे, और यदि कुछ ठीक समझमें न आये, शंका रहे, या मतभेदकी गुंजाअिश मालूम हो, तो गांधीजीसे मिलकर या पत्रव्यवहारके द्वारा चर्चा कर लेते थे। गांधीजी भी अपने विचार अुन्हें जी खोलकर समझाते थे; और यदि कोअी मतभेद हो, तो अपनी बात पर फिर गंभीरतासे विचार करते थे।

शरीर जब तक बिलकुल टूट ही नहीं गया, तब तक वे बम्बअीके सार्वजनिक जीवनमें पूरा भाग लेते रहे, और बम्बअीके नगरपति (मेयर) के पद तक पहुंचे। दुर्भाग्यसे चढ़ती युवावस्थामें ही अुन्हें फेफड़ोंके क्षयने पकड़ लिया, और अुसके खिलाफ अुन्हें २५ वर्ष तक जीवन-मरणकी अनेक लड़ाअियां लड़नी पड़ीं। महीनों तक आराम लेना, दवाका सेवन करना, ऑपरेशन कराना, और फिर अैसा लगना कि अब तबीयत बिलकुल सुधर गयी है, अिसलिअे कुछ साल फिर सार्वजनिक काममें पड़ना, और अन्तमें बीमार पड़ना; अैसा ही अुनका जीवनक्रम हमेशा चलता रहा। अिसी दरमियान शस्त्रक्रियासे अुनकी कअी पसलियां भी चली गयीं।

मुझे जेलमें अुनके साथ कुछ माह तक अेक ही बैरकमें रहनेका अवसर मिला था। अुन दिनोंका हमारा वह कारावास, जेलर सहाशयके प्रतापसे, जेलके हमारे दूसरे अनुभवोंके मुकाबले मानसिक आरामकी दृष्टिसे बड़ा कठिन हो पड़ा था। मथुरादासभाअीकी शारीरिक प्रवृत्ति जैसी नाजुक थी, अुतना ही कोमल अुनका मन भी था। मानसिक आघातसे अुन्हें तीव्र दुःख पहुंचता था। थोड़ा भी शोर-गुल होता, तो अुन्हें नींद नहीं आती थी; अुसी तरह यदि मनको दुःख पहुंचानेवाली कोअी भी बात हो जाती, तो अुनका आराम विचलित हो जाता था। अैसा होते हुअे भी मैं देखता था कि जो भी शुभाशुभ आ पड़ता, अुसे वे बिना किसी कुड़कुड़-बड़बड़के सहन कर लेते थे। अैसी कठिन स्थितियोंका भी अच्छेसे अच्छा अुपयोग कर लेनेकी विवेकबुद्धि अुन्हें स्वभावतः प्राप्त थी। अुनका यह गुण मुझे बहुत अनुकरणीय मालूम होता था।

मथुरादासभाअीने गुजरातको बोधप्रद पुस्तकें देकर अपनी बीमारीका भी सदुपयोग कर लिया। क्षय जैसे भयंकर और मनुष्यको जीवनसे निराश कर देनेवाले रोगका अुन्होंने पूरा अभ्यास किया और बीमार तथा अुसके हितैषियोंके लिअे बहुत अुपयोगी तथा आशा बंधानेवाली 'मरुकुंज' के सूचक नामसे अेक पुस्तक लिखी।* लोकमान्य तिलकके महान् ग्रंथ 'गीतारहस्य' का सारांश प्रस्तुत करनेवाली 'कर्मयोग' नामकी अेक दूसरी (गुजराती) पुस्तक भी अुन्होंने लिखी है। जो लोग 'गीतारहस्य' नहीं पढ़ सकते, या तत्त्वज्ञानका अुसमें किया हुआ कठिन विवेचन नहीं समझ सकते, अुनके लिअे तिलक महाराजके विचारोंका परिचय पानेके लिअे यह पुस्तक बहुत कामकी है।

गुजराती भाषामें गांधीजीके जीवन और विचारोंका दोहन करनेवाली सर्व प्रथम पुस्तक 'गांधीजीनी विचार-सृष्टि' भी मथुरादासभाअीकी ही थी। अिस नामसे वह अुस समय काफी प्रसिद्ध थी, पर अब बहुत दिनोंसे अप्राप्य हो गयी है। गांधीजीके देहान्तके बाद 'बापूनी प्रसादी' नामसे अुन्होंने गांधीजीके साथके अपने सम्पर्क और पत्रव्यवहार आदिके संस्मरण भी प्रकाशित किये हैं। अुसमें अुनके प्रति गांधीजीका वात्सल्य और गांधीजीके प्रति अुनकी भक्ति बड़े आह्लादकारी ढंगसे प्रकट हुअी है।

मथुरादासभाअी तत्त्वज्ञानके गहरे अभ्यासी थे। जेलमें अुनके पुस्तक-संग्रहमें मैंने जितनी पुस्तकें देखीं, वे सब पूर्व और पश्चिमके दर्शनोंकी ही थीं। जीवनको वे अेक गंभीर चीज मानते थे। अपनी मांके वे अिकलौते बेटे थे, और अैसे दूसरे अनेक अेकमात्र पुत्रोंकी तरह अुनके अंतःकरणकी भावनाअें बहुत कोमल थीं। बोलनेवालेके शब्दों और बोलनेकी रीतिका अुनके मन पर तीव्र असर होता था। अपने व्यवहारमें विवेक और खरापन रखनेके लिअे वे बहुत ही जाग्रत रहते थे। राजनीतिमें भाग लेनेवाले लोगोंको अैसी बातोंमें अपनी चमड़ी कुछ मोटी और अन्तःकरण भोंथरा रखना पड़ता है। यह बात मथुरादासभाअीसे सधनेवाली नहीं थी। अिसलिअे यद्यपि वे सार्वजनिक क्षेत्रमें रस लेते थे और अपने कर्तव्य भी करते थे, लेकिन अुसकी गंदगीसे अुन्हें कष्ट होता था। दूसरोंको भी अपने ही जैसा मानकर, बिना विचारे वे अेक शब्द भी नहीं बोलते थे। कोअी बात पसंद न आये, तो चुप रहते; लेकिन बिना बोले काम न चलता हो, तो विवेकका पालन करते हुअे भी भरसक यह कोशिश करते थे कि सामनेवालेको अुनका मत स्पष्ट रूपसे मालूम हो जाय। अिसलिअे यदि कभी वे किसी बातकी टीका करते, तो गांधीजी तथा अुनके दूसरे मित्रोंको अुस पर आदरपूर्वक विचार करना आवश्यक हो जाता था। अितना अुनके प्रति सब लोगोंका आदर था।

महादेवभाअी या प्यारेलालजीको गांधीजीके मंत्रीकी तरह जैसी प्रसिद्धि मिली, वैसी अुन्हें नहीं मिली। लेकिन यदि परिस्थितियां अुनके अनुकूल होतीं, तो अुनकी गिनती गांधीजीके अुसी वर्गके साथियोंमें होती। गांधीजीका वात्सल्य तो अुन्होंने वैसा ही पाया, जैसा देवदासभाअी आदि गांधीजीके पुत्रोंने।

'हिन्दुस्तान' (गुजराती)के आजके अंकमें पढ़ा कि "जीवनभर बम्बअी शहरकी सेवा करनेवाले श्री मथुरादासभाअीने अपनी मृत्युका अुपयोग शहरकी सेवामें करनेका आखिरी मौका भी खाली नहीं जाने दिया। अुन्होंने अपने वसीयतनाममें यह आग्रह किया है कि अुनकी मृत-देहका अुपयोग डॉक्टरी शोधके लिअे किया जाय। अुनकी अिस वसीयतके अनुसार मृत्युके बाद अुनके मृत-देहमें से पेटका भाग निकाल लिया गया है, जो डॉक्टरी पढ़नेवाले विद्यार्थियोंके काम आयेगा।" अिस तरह मथुरादासभाअी अपना जीवन सार्थक कर गये हैं।

वर्धा, ११-७-'५१ कि० घ० मशरूवाला
(गुजरातीसे)

* अिसी नामसे अिसका हिन्दी अनुवाद भी नवजीवन प्रकाशन मंदिरसे प्रकाशित हुआ है। कीमत १-४-०; डाकखर्च ०-३-०

www.vinoba.in

विनोबाकी पैदल यात्रा

१६

तीसवां मुकाम

[ता० ६–४–'५१ : हैदराबाद : ७ मील]

हैदराबादके लोगोंने विनोबाजीका अभूतपूर्व स्वागत किया। सवेरे पांच बजेसे लोग जगह-जगह जमा हो गये थे। हुसेन सागर तालाबसे चमनबाग तक सारे रास्ते रामधुन गूंज अुठी। सात बजेके पहले-पहले चमन आ पहुंचे। मूसा नदीके किनारे चमन अेक सुंदर बगीचा है। यहींसे बापूजीकी भस्मका संगममें विसर्जन हुआ था। दिन भर मिलनेवालोंका तांता-सा लगा रहा। दोपहरको सामुदायिक कताअीमें करीब डेढ़ सौ भाअी-बहन अुपस्थित थे।

कार्यकर्ताओंकी सभामें अनेक प्रश्नोत्तर हुअे।

पहिला प्रश्न 'निसर्गोपचारके क्षेत्रमें बरसोंसे सेवा-कार्य करते रहनेवाले अेक कार्यकर्ताका था: अभी तक प्राकृतिक चिकित्साके कार्यको प्रतिष्ठा क्यों नहीं मिली? विनोबाने अुनका दुःख समझकर अुन्हें सांत्वना देते हुअे कहा: "जिस तरह हम लोग यह कह सकते हैं कि हमने तीस सालसे सिवा खादीके और किसी वस्त्रका अुपयोग किया ही नहीं, वैसे क्या यह कह सकते हैं कि हमने अिलाज भी प्राकृतिक चिकित्साके सिवा दूसरा करवाया ही नहीं?"

अुनकी निष्ठा और लगनको बल देते हुअे विनोबाने आगे कहा: "लेकिन हमें तो फलकी अपेक्षा रखे बिना काम ही काम करते रहना है। प्राकृतिक चिकित्साके क्षेत्रमें तो यह और भी आवश्यक है। हमारा काम यशस्वी होगा, तो हमारे मरीज ही हमारे प्रचारक बन जायंगे। और कामकी प्रतिष्ठा तो बढ़ेगी ही।"

अेक भाअीने पूछा: आजकल हरिजन मेहतर ही समझे जाने लगे हैं, तो हम खुद ही हमारे नामके साथ 'हरिजन' शब्द क्यों न लगायें?

विनोबा: आपको अधिकार है, बशर्ते कि आप खुद मानव-मानवमें कोअी फर्क न करें।

प्रश्न: कांग्रेसके बड़े-बड़े नेता मंत्रि-मंडलमें हैं। सर्वोदयको मानना और मंत्रि-मंडलमें रहकर सर्वोदय-विरोधी आचरण करना, यह कैसे अुचित है?

विनोबा: सर्वोदय अेक विचार है। वह न तो कोअी कानून है, न संप्रदाय। वह ध्रुव है। अुसकी ओर देखते हुअे चलते रहना है। आप आर्यसमाजी हैं। आर्यसमाजके नियमोंके अनुसार चलनेकी कोशिश आप करते हैं, तो आप आर्यसमाजी रह सकते हैं। आर्यसमाज अेक संप्रदाय है। सर्वोदय संप्रदाय नहीं है। अुसमें दाखिल होनेके कोअी नियम नहीं हैं। बीड़ी पीनेवाला या शराबी सर्वोदय विचार-वाला नहीं हो सकता, अैसा नहीं कह सकते। हो सकता है, अैसा भी नहीं कह सकते। अपने लिअे कठोर कसौटी रखनी चाहिये। दूसरोंके लिअे वे जो कहें, सत्य समझना चाहिये। अिसलिअे सर्वोदय-विचारवाले लोग हर जगह हो सकते हैं — सरकारमें भी और व्यापारमें भी। वे सर्वोदयकी दिशामें बढ़ते रहेंगे। अर्थात् हम सर्वोदयकी कसौटी पर दूसरोंको नहीं अपने आपको ही कस सकते हैं।

प्रश्न: क्या सर्वोदय-समाज अेक राजनैतिक पार्टीके रूपमें काम करेगा?

अुत्तर: सर्वोदय समाज केवल व्यक्तियोंके लिअे है। संस्था या संघके लिअे नहीं। सर्वोदयमें करोड़ों लोग शामिल हो सकते हैं। परंतु चुनावके लिअे सर्वोदयके टिकट पर खड़े नहीं किये जा सकते।

प्रश्न: रचनात्मक कार्य सरकारके जरिये कराना अच्छा है या जनताकी ओरसे ही होना चाहिये?

अुत्तर: दोनों कर सकते हैं। ढंग दोनोंका अलग-अलग होगा। जो चीज आम जनतामें चलानी है, लेकिन लोगोंमें अभी प्रिय नहीं है, वह सरकार नहीं कर सकती। लोगोंके लिअे आवश्यक, किन्तु लोगोंको प्रिय न लगनेवाली बात करनेके लिअे सुधारक लोग चाहियें। लोकनेता केवल सेवक नहीं होते। वे समाजको आगे ले जानेवाले भी होते हैं। लेकिन सरकार तो वही कर सकती है, जो लोग चाहते हैं। लोग शराबबंदी नहीं चाहेंगे, तो सरकार नहीं कर सकती। सेवक अुसके लिअे कोशिश कर सकता है। यानी सरकार लोकमान्य तामीरी काम कर सकती है। लोकसेवक क्रांतिकारी कार्य भी कर सकता है।

प्रश्न: अितनी कोशिशोंके बाद भी खादीका प्रचार ठीक-ठीक होता दिखायी नहीं देता। सरकारी मददसे अिसका प्रचार करानेके संबंधमें आपकी क्या राय है?

अुत्तर: चायका प्रचार तो सरकारी मददके बिना भी घर-घर हो गया। मामूली लिप्टनने वह कर दिया। खादीका प्रचार अितना आसान नहीं है। खादीका कार्यक्रम आजके प्रवाहके विपरीत है। लेकिन अुसका बीज बोया जा चुका है। वह अुगेगा या नहीं, अिसीमें लोगोंको शंका थी। अैसे काम आरंभमें कठिन ही होते हैं। गांधीजीकी खूबी यह थी कि अुन्होंने प्रचलित राजकारणमें खादी और हरिजनसेवा जैसी अलग-अलग धाराअें छोड़ दीं। अब आज यदि सरकारें केवल खादीको चलाना चाहें, तो मैं अुसका विरोध नहीं करूंगा। पर मुझे अिसमें शंका है। क्योंकि अगर वह यह कहे कि हमें मिलें नहीं चाहिये, हम खादी ही चलायेंगे, तो वह डांवाडोल हो जायगी। लोग चुनावके लिअे आवाहन देंगे। खादीके मसले पर चुनाव हो, तो खादीवाला हार जायगा और मिलवाला चुना जायगा।

अेक भाअी — तो आप जैसोंको खड़ा होना चाहिये विनोबाजी!

विनोबा — मैं तो बुरी तरह हारूंगा।

सारी सभा हास्य-लहरोंमें डूब गयी!

चर्चाके बाद प्रार्थना हुअी। चमन बागकी हरियालीमें आसमानके नीचे करीब दस हजार लोगोंने सर्वोदयके पथिकसे सर्वोदयका संदेश सुना। प्रार्थनाके बाद जो दो मिनिटकी शांति रखनेको कहा जाता है, अुसका आज मानो प्रत्यक्ष ही परस हुआ — अितनी अद्भुत शांति छोटे-बड़े सबने रखी।

हैदराबादकी प्रार्थना-सभामें जो भाषण हुआ, वह कअी दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण था। अपने भाषणमें विनोबाने कहा:

आज करीब अेक महीना हुआ है पैदल यात्रा करते हुअे। अभी मैं आपके गांव आ पहुंचा हूं और कल परमेश्वरकी कृपासे शिवराम-पल्ली जाना होगा। आप लोग जानते हैं, वहां अेक सर्वोदय संमेलन हो रहा है। अुसके लिअे हम पैदल निकल पड़े हैं। आप लोगोंमें से भी बहुत सारे वहां पहुंच जायेंगे और जो कुछ वहां पर प्रार्थना आदिमें सुननेका अवसर मिलेगा, अुसमें शरीक होंगे अैसी मैं अुम्मीद करता हूं।

आज सुबह पांच बजे हम सिकंदराबादसे निकले और यहां पैदल आये। बीचमें लोगोंने हम पर काफी प्रेम बरसाया। हम नहीं जानते कि अुस प्रेमके लायक हम कब बनेंगे। अुसके लिअे अभी तो हम अितना ही कर सकते हैं कि आप लोगोंका शुक्रिया मानें।

लेकिन अुसमें अेक घटना हुअी, जिसका मुझे कुछ रंज रहा। वह मैं आप लोगोंके सामने रख देना चाहता हूं। और वहींसे मुझे जो कुछ कहना है, अुसका आरंभ भी हो जाता है। हुआ यह कि बीचमें हमें रोक लिया गया और अेक हरिजन छात्रालयमें ले गये। वहां पर कोअी बीस-पच्चीस हरिजन छात्र खड़े थे। अुनसे मुलाकात हुअी। हमने पूछा कि यहां हरिजनोंके अलावा और भी कोअी दूसरे लड़के रहते हैं। तो जवाब मिला कि नहीं, सिर्फ

www.vinoba.in

हरिजन ही यहां रहते हैं। तो यह सुनकर मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने वहां भी बताया और वही बात यहां भी रखना चाहता हूं कि अिस तरह हरिजनोंके अलग छात्रालय चलाना कोअी अस्पृश्यता मिटानेका सही तरीका नहीं हो सकता, बल्कि वह अस्पृश्यता टिकानेका ही तरीका हो सकता है। पहले जब ये छात्रालय शुरू हुअे, तब अिनकी जरूरत अुस हालतमें रही होगी। अुसकी वहसमें मैं नहीं पड़ता। लेकिन आज जो स्थिति है, अुसमें मेरा मानना है कि हरिजनोंके अलग छात्रालय नहीं चलने चाहियें, बल्कि सब छात्रालयोंमें अुनको जगह देनी चाहिये। अुनकी तालीमके लिअे जो भी सहूलियतें दी जा सकती हैं, वे जरूर दी जानी चाहियें। लेकिन अुनको अलग जातिके प्राणी समझकर रखना किसी भी तरह अुचित नहीं है। अिन दिनों अगर हम यह तरीका अख्तियार करेंगे, तो अुससे हम अपना मकसद हासिल नहीं करेंगे, बल्कि अुलटी दिशामें चले जायेंगे। मैंने तो सुना कि यह हालत अिस अेक ही छात्रालयकी नहीं है, बल्कि सारे राज्यमें अैसा ही कुछ चलता है; और अिस तरह अलग-अलग छात्रालय रखनेसे हरिजनोंकी सेवा होती है, अैसा लोगोंका खयाल है। यह मैं जरूर समझ सकता हूं कि जिन्होंने यह शुरू किया है, अुन्होंने हरिजन-छात्रोंकी सेवाके खयालसे ही किया है, और छूत-अछूतका भाव मिटानेकी भी अुनकी मंशा है। लेकिन बावजूद अुनकी अिस मंशाके और सद्भावके यह वह तरीका नहीं है, जिससे हमारा सारा समाज अेकरस बन जाय।

हमको जो काम करना है, वह यही है कि हिन्दुस्तानका सारा समाज अेकरस बन जाय। अितने बड़े समाजमें मुख्तलिफ विभाग हो सकते हैं। अुसमें कोअी बात नहीं है। कअी धंधे रहते हैं। अुनको करनेवालोंके मानसिक संस्कार अलग-अलग होते हैं। यह सारी विविधता समाजमें रहेगी। लेकिन विविधताके रहते हुअे भी अंदरसे अेकता महसूस होनी चाहिये, जिससे सारा समाज अेकरस प्रतीत हो। आजकल तो यहां तक हालत है कि राज्योंके चुनावोंमें जहां कोअी जाति और धर्मका सवाल नहीं होना चाहिये, वहां भी चुनावमें जब लोग खड़े किये जाते हैं, तब अुनकी जाति और धर्म देखे जाते हैं। और जाति तथा धर्मका खयाल करके ही चुनावके लिअे आदमियोंको खड़ा करना पड़ता है। यह सारी दुर्दशा है। अिससे हमें मुक्त होना है, यह ध्यानमें रहना चाहिये।

और यह तभी बन सकता है जब हम हरअेक हिन्दुस्तानीको सिर्फ हिन्दुस्तानीके नाते ही देखेंगे। अितना ही नहीं, बल्कि वह अेक अिन्सान है, अिस खयालसे देखेंगे तभी यहांका समाज अेकरस होगा और हिन्दुस्तानके जरिये दुनियामें जो बड़ा काम होनेवाला है, अुसकी पात्रता हममें आयेगी।

जहां मैंने हिंदुस्तानके हाथसे होनेवाले बड़े कामका जिक्र किया, वहां आप लोग सुनना चाहेंगे कि वह बड़ा काम कौनसा है। मैं कहता हूं कि हिंदुस्तानके लिअे परमेश्वरने अेक बहुत ही भारी काम सौंप रखा है। अगर अैसा अुसका विचार नहीं होता, तो हम जैसे टूटेफूटे लोगोंको अहिंसाके तरीकेसे आगे बढ़ाना, अुनको अेक बड़ी भारी हुकूमतके पंजेसे छुड़ाना और अुनके हाथमें हिंदुस्तानकी सत्ता देना, यह सारा नाटक परमेश्वर किस लिअे करता? यह अुसने अिसलिअे किया है कि अुसकी मंशा है कि हिंदुस्तानके जरिये अेक विचार, जिसकी सारी दुनियाको आज भूख है, फैले।

आप लोगोंको अितना तो मालूम है कि यहां हम लोगोंने गांधीजीका अेक शब्द ले लिया है अुनकी मृत्युके पीछे। वह शब्द है सर्वोदय। अब यह शब्द हिंदुस्तान भरमें चला है। हिंदुस्तानके बाहरके लोग भी अिस समाजमें दाखिल होना चाहते हैं। और यहां तक कहते हैं कि हमें कोअी अैसा चिह्न बताओ, जिसके रखनेसे हम सर्वोदयके सेवकके तौर पर जाहिर हों। हम अहिंसाके प्रेमी हैं, अिसका अिजहार हो। अिस तरह हिंदुस्तानके बाहरके लोग पूछते हैं। यानी सारी दुनियामें अेक अैसी जमात, फिर वह छोटी ही क्यों न हो, तैयार हो रही है, जो अपनेको अेक ही कौम, अेक ही अुम्मत, अेक ही जमात मानती है और अहिंसामें ही दुनियाका भला और छुटकारा देखती है। यह जमात आज छोटी जरूर है। लेकिन आगे वह बढ़नेवाली है। अिसलिअे बढ़नेवाली है कि दिन ब दिन सायन्सकी प्रगति होनेवाली है। जब कोअी मुझसे पूछते हैं कि क्या दुनियामें अहिंसा फैलेगी, अहिंसाके लिअे दुनियामें मौका है? तो मैं कहता हूं कि अहिंसाके ही लिअे दुनियामें मौका है। और अिसका सबूत यही है कि दुनिया अब पुराने जमानेकी हालतमें रहना नहीं चाहती, बल्कि सायन्सकी प्रगति करना चाहती है। जहां सायन्सकी प्रगति होती है, वहां सारी दुनिया, सारा समाज अेक बन जाता है। और अैसी अेक शक्ति हाथमें आती है, जिसका जोड़ हम अगर अहिंसाके साथ न करें, तो मनुष्यकी हस्ती ही खतरेमें पड़ जाती है। तो अब मनुष्यके सामने यह सवाल नहीं है कि आप हिंसाको पसंद करते हैं या अहिंसाको पसंद करते हैं। बल्कि यह सवाल है कि आप सायन्सको पसंद करते हैं या नहीं। अगर आप सायन्सको पसंद करते हैं, तो आपको हिंसा छोड़नी ही होगी। और अगर आप हिंसाको पसंद करते हैं, तो आपको सायन्स छोड़ना होगा। दोनों अेक साथ नहीं चलेंगे। अगर ये दोनों बढ़ते हैं, तो दोनों मिलकर मानव-जातिका खातमा करेंगे। अिसलिअे अगर हिंसाको चाहते हैं, तो सायन्सकी प्रगति रोकिये। फिर हिंसा कुछ न कुछ चलेगी। और अगर सायन्सकी प्रगतिको रोकना नहीं चाहते, बढ़ाना चाहते हैं, तो हिंसाको छोड़िये। यानी हिंसा या अहिंसा यह सवाल नहीं है, बल्कि सायन्सको चाहने न चाहनेका सवाल है।

मैं तो सायन्सको चाहता हूं, अुसमें विश्वास रखता हूं। सायन्ससे ही मानवका जीवन प्रेममय हो सकता है, परस्पर सहकारमय हो सकता है, ज्ञानमय बन सकता है। अुसके विचारका स्तर भी अूंचा हो सकता है। यह सारा विज्ञानसे होता है। अिसलिअे विज्ञानकी प्रगतिको मैं रोकना नहीं चाहता, बल्कि अुसको बढ़ाना चाहता हूं। अिसीलिअे जानता हूं कि अुसकी तरक्कीके साथ हिंसा चलनेवाली नहीं है। तो हिंसाको छोड़ना ही होगा। अैसा संकल्प सायन्सको बढ़ानेके लिअे जरूरी है। अगर अैसा संकल्प मैं नहीं करता, तो सायन्सका ही शत्रु बन जाता हूं। आज दुनिया सायन्सको छोड़ना नहीं चाहती। अिससे जो लाभ हैं, वे जाहिर हैं।

अिसलिअे सारे समाजमें अभी अेक अैसा विचार फैला है — हिंदुस्तानमें और हिन्दुस्तानके बाहर — कि अगर मानवोंके मसलोंको हल करनेका कोअी अहिंसक तरीका सूझे, तो जरूर अुसको खोजना चाहिये और हासिल कर लेना चाहिये। सायन्सवालोंको लगता है कि गांधीजीने जो प्रयोग हिंदुस्तानमें किया, अुसमें से शायद दुनियाको यह तरीका मिले। तो दुनिया अिस आशासे हिन्दुस्तानकी तरफ देखती है।

और आज, जब मैं हैदराबादमें आया हूं, तो मुझे यह भी कहनेकी अिच्छा होती है कि आपका छोटासा हैदराबाद सारे हिंदुस्तानका अेक नमूना है। क्योंकि हिन्दुस्तानमें जितनी विविधताअें हैं, वे सब यहां मौजूद हैं। यहां हिंदू और मुसलमान काफी तादादमें हैं। अनेक धर्मवाले भी यहां अिकट्ठे हो गये हैं। यहां विविध भाषाअें विकसित हो रही हैं। अिसलिअे यह छोटासा राज्य और यह छोटा-सा शहर हिंदुस्तानकी अेक प्रतिमा, हिंदुस्तानका

www.vinoba.in

अेक छोटा-सा रूप है। तो जो सवाल हम यहां हल करेंगे, अुससे सारे हिंदुस्तानका सवाल हल करनेकी कुंजी मिल जायगी, और सारी दुनियाके सवालको भी हल करनेकी कुंजी मिल जायगी। तो हैदराबादवालोंकी जिम्मेदारी समझानेके लिअे मैंने प्रास्ताविक तौर पर ये कुछ शब्द कहे हैं।

तो आप लोगोंको मैं जाग्रत कर देना चाहता हूं। आप यह मत समझिये कि हम अेक छोटे शहरके रहनेवाले हैं। बल्कि यह ध्यानमें रखिये कि आप अैसे शहरके नागरिक हैं, जो सारे हिन्दुस्तानका प्रतिनिधित्व करता है। तो यहां अगर आप अेक अच्छाअीका, भलाअीका नमूना बता सकें, जिससे कि यहांकी समस्याअें हल हुअीं, तो आप समझ लीजिये कि आपने सारे हिंदुस्तानकी अेक बड़ी भारी खिदमत की। तो यह अेक अुत्तम मौका आप लोगोंको मिला है। यहां आपकी हुकूमत कायम हुअी है। कुछ लोगोंने कहा कि यहांके कार्यकर्ताओंमें अनुभवकी कमी है। तो मैंने कहा कि भाअी मैं तो अुलटा मानता हूं। यानी हिंदुस्तानमें कांग्रेसने साठ साल तक अनुभव लिया, वह तो यहांके लोगोंको मुफ्तमें मिला है। और अुसके साथ-साथ अुन्होंने जो अपना अनुभव हासिल किया होगा वह अलग। अिस तरहसे यहांके लोगोंको ज्यादा अनुभव है, अैसा समझना चाहिये। जो लड़का अेक विद्वान पिताके घरमें पैदा होता है, अुसको पिताकी विद्या तो पहलेसे ही प्राप्त होती है; साथ-साथ वह अपनी विद्या भी बढ़ाता है, तो वह पितासे भी बढ़कर विद्वान होता है। यही हालत हैदराबादकी है। और हैदराबादवाले हिन्दुस्तानको राह दिखा सकते हैं।

हैदराबाद राज्यमें मैं अभी पैदल चलता हुआ आया, तो रास्तेमें अैसे कअी गांव मिले, जिनको छोड़नेकी अिच्छा नहीं होती थी। वहांकी मानवता किसी भी दूसरी जगहकी मानवतासे कम नहीं थी और वहां मैंने प्रेमभाव भरा हुआ पाया। वह अेक अैसा वातावरण था, अेक अैसी हवा थी कि जहां अगर सेवकगण रह जायं, तो अेक स्वावलंबी स्वराज्य जैसी वस्तु हम दिखा सकते हैं। आपका यह प्रदेश पिछड़ा हुआ है, अैसा कहते हैं। अच्छी सड़कें यहां नहीं हैं, अैसा भी कहते हैं। बात तो ठीक है। लेकिन यह जो पिछड़ी हुअी हालत है, अुसीका अगर हम लाभ अुठायें तो आगे बढ़ सकते हैं। क्योंकि जहां ये सड़कें वगैरा होती हैं, वहां दूसरी सहूलियतें तो हो जाती हैं। साथ-साथ दुनियाकी कअी बुराअियां भी वहां आ पहुंचती हैं। तो वे बुराअियां अभी तक कअी गांवोंमें नहीं पहुंची हैं। अैसे गांवोंमें अगर हमारे कार्यकर्ता रह जायं और अुस-अुस गांवके लिअे सोचने लगें, तो अेक अेक गांवमें अेक-अेक रामराज्य स्थापित कर सकते हैं। यह स्थिति मैंने कअी हिस्सेमें देखी।

फिर मैंने सोचा यहां अनेक जमातें अिकट्ठी होती हैं और अनेक भाषाअें अिकट्ठी होती हैं। ये लोग अगर थोड़ी कोशिश करेंगे, तो सारे हिन्दुस्तानके अगुआ बन सकते हैं। और अैसी कोशिश यहां क्यों नहीं होगी? अगर यह ठीक तरहसे अनुभव हो और ध्यानमें आ जाय कि हम अगर अिस तरह करते हैं, तो सारे हिन्दुस्तानको अेक अुत्तम मार्ग बताते हैं और यहां बैठे-बैठे हिन्दुस्तानकी सेवा करते हैं, तो यहांके छोटे-छोटे कार्यकर्ता अपनेको छोटे नहीं मानेंगे, बल्कि यह महसूस करेंगे कि हम तो परमेश्वरका कार्य करनेवाले अुसके भक्तगण हैं। फिर वे अपने सारे भेद भूल जायेंगे और जनताकी सेवामें लग जायेंगे। तो अुससे अुनके चित्तका समाधान होगा, हैदराबाद राज्यको लाभ होगा और अुसके साथ-साथ सारे देशको लाभ होगा।

देखिये, यहां पर अितनी भाषाअें हैं: मराठी भाषा है, कन्नड़ है, तेलगू है, अुर्दू है और हिंदी है। ये पांच भाषाअें यहां चलती हैं। अगर आप अेक दूसरेकी भाषा सीखनेकी कोशिश करें और अुसके लिअे लिपि अेक बना दें, तो आप देखेंगे कि हिन्दुस्तानका मसला आप हल कर सकते हैं। नागरी लिपिमें अुर्दू लिखी जाय। हिंदी और मराठी नागरीमें लिखी ही जाती है। कन्नड़ और तेलगू भी नागरीमें लिखी जायं। अगर आप यह आरंभ करें, तो हिंदुस्तानका अेक बड़ा भारी मसला हल हो जाता है। हिन्दुस्तानमें जो दूसरी जबानें हैं, वे अेक दूसरीसे बहुत अलग नहीं हैं। लेकिन अुनकी लिपियां अलग हैं। ये दीवालकी तरह खड़ी होती हैं और भाषाओंका अध्ययन करनेकी हमारी हिम्मत नहीं होती। मैं तो हिन्दुस्तानकी बहुत सारी लिपियां सीख चुका और भाषाअें भी सीख चुका हूं। मेरे अनुभवसे मैं कहता हूं कि अेक अेक भाषा सीखनेमें मुझे बहुत तकलीफ हुअी है। आंखको भी तकलीफ हुअी है। तो यदि आप नागरी लिपिमें ये सारी जबानें लिखते हैं, कुछ किताबें भी तैयार करते हैं, और आपकी स्टेट अगर अिसका जिम्मा अुठाती है या कोअी परोपकारी मंडली अैसी पुस्तकोंके प्रकाशनका जिम्मा अुठाती है, तो समझ लीजिये कि अेक लिपिका अेक बड़ा भारी विचार आप हिन्दुस्तानको देते हैं।

अिससे यह होगा कि अुर्दू अगर नागरीमें लिखी जाने लगी, तो हिंदी पर अुर्दूका बहुत असर होगा और हिंदी ठीक रास्ते पर रहेगी। मेरे कहनेका यह मतलब तो नहीं है कि कन्नड़ या अुर्दू या तेलगू लिपि न चले। अिन लिपियोंमें भी खूबियां हैं। अिसलिअे ये भी चलें, लेकिन अिनके साथ-साथ अगर ये सारी भाषायें नागरीमें लिखी जाती हैं, तो अच्छी हिन्दुस्तानी कैसी हो सकती है, अिसका नमूना आपने पेश कर दिया। सारे हिन्दुस्तानको अेक कौमी जबान चाहिये, यह सब लोग मानते हैं। लेकिन अुस कौमी जबानका रूप क्या होना चाहिये, अिस विषयमें काफी बहस हुआ करती है। यह सारी बहस खतम हो जायगी और यहां आप अैसी खूबसूरत हिन्दुस्तानी सारे राष्ट्रके लिअे देंगे कि जिसको बाकीके सारे लोग सहज ही अुठा लेंगे। यहां अुर्दू तो पहलेसे ही चलती है और अुसकी काफी प्रगति भी हुअी है। वह अुर्दू अगर थोड़ी आसान करके नागरी लिपिमें लिखी जाय, तो आपने राष्ट्रभाषाके लिअे बड़ा भारी काम किया और हिन्दुस्तानका मसला हल कर दिया।

अैसा आप करेंगे तो यहांकी जमातें अेक-दूसरेकी भाषा प्रेम-भावसे जल्दी ही सीख लेंगी। यह तो मैंने सहज आपके सामने विचार रख दिया। अिस पर से आपके ध्यानमें आ जायगा कि हिंदुस्तानके मसले आप किस तरह आसानीसे हल कर सकते हैं।

अभी आप देखेंगे कि अिस हैदराबाद राज्यमें खादीके लिअे जितनी सहूलियतें हैं, जनतामें अुसके लिअे जो शक्यताअें हैं, अुतनी हिंदुस्तानके दूसरे हिस्सोंमें नहीं हैं। तो अगर आप रचनात्मक काम करनेवाले अिस काममें लग जायं और हरअेकको कातना-बुनना सिखा दें, तो जो परंपरा यहां मौजूद है अुसका पूरा लाभ मिलेगा और आप देखेंगे कि यहां खादी पनपेगी, ग्रामोद्योग पनपेंगे। आप यह भी देखेंगे कि यहांकी जनतामें छूत-अछूतका भाव अितना नहीं है, जितना हिन्दुस्तानकी दूसरी जगहोंमें है। अुसके कअी कारण हैं। मुख्य कारण तो यही है कि यहांकी अनेक जमातें और कौमें, किसी भी कारणसे कहिये, अेक दूसरेसे मिलती-जुलती रही हैं। नतीजा अुसका यह हुआ कि जमातोंके बीच जो कठोरता व्यवहारमें दूसरी जगह दीख पड़ती है, वह कट्टरपन और कठोरता यहां अितनी नहीं है। तो यहां छूत-अछूतका सवाल भी आप बहुत शीघ्रतासे मिटा सकते हैं। मैंने आपके देहातोंमें कअी जगह पूछा कि हरिजनोंके बारेमें क्या स्थिति है, तो लोग यही कहते हैं कि हां, हरिजन हमारे ही हैं।

www.vinoba.in

अुनके लिअे अलग स्कूल चाहिये, अैसा कहीं भी नहीं सुना। यह हालत हिन्दुस्तानके दूसरे भागोंमें नहीं है। तो यह सारा लाभ आपको मिल सकता है।

मेरा कहना यह है कि आप लोग अपना दिल बड़ा बनाअिये। आप समझिये कि आपको अेक बड़ा भारी मौका मिला है। जब तक यह हैदराबाद स्टेट आजके जैसी कायम है, तब तक आपको यह अेक मौका मिला है। हां, मैं यह नहीं सुझाना चाहता कि यहांके भाषावार विभाग अुन-अुन भाषावाले प्रांतोंमें न मिलें। यह सारा मैं कहना नहीं चाहता। यह तो जैसा आप चाहेंगे वैसा कर सकते हैं। लेकिन जब तक यह स्टेट अेक है, तब तक अेक बड़ी भारी चीज करनेका आपको मौका मिला है। अिसका लाभ अुठाअिये और यहांकी सारी कौमें मिलकर अेक जमात हैं, सब भाअी-भाअी हैं, यह आप सिद्ध करके बताअिये। यही आप लोगोंसे मेरी अर्ज है। अैसा हुआ तो कहा जायगा कि शिवरामपल्लीमें जो सर्वोदय सम्मेलन हुआ वह सार्थक हुआ और सर्वोदयकी ज्योति सारी दुनियाके सामने हैदराबादने प्रगट की।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही ५ मील चलकर हम लोग शिवरामपल्ली आ पहुंचे। यात्राका पहला पर्व पूरा हुआ। शिवरामपल्ली छोटा-सा देहात है। अपने अिस खास मेहमानका स्वागत करनेके लिअे देहातकी जनता सवेरेसे ही रास्ते पर कतार बनाये खड़ी थी। रामधुन और जयजयकारकी गूंजके साथ विनोबा शिवरामपल्ली पहुंचे। आश्रमके बगीचेमें अुनका स्वागत किया गया।

दा० मूं०

भूदान-यज्ञ

तेलंगानामें विनोबाजीकी भूदान-यज्ञकी सफलता पर ता० २३ जूनके 'हरिजनसेवक' में हैदराबाद सरकारके सूचना-विभाग द्वारा प्रकाशित अेक 'अनधिकृत' सूचनाका सारांश दिया था। अुसमें अिस विषयकी पूरी जानकारी नहीं थी। अिस बीच विनोबाजीने दानमें मिली हुअी भूमिके बंटवारेके लिअे अेक समितिका निर्माण भी किया है। अिस प्रसंगका पूरा विवरण यहां दिया जाता है।

१. तेलंगानामें विनोबाजीको अिस तरह मिली हुअी कुल भूमि १२००० अेकड़ है। अुन्होंने अिस दानके अुद्देश्यको पूरा करनेके लिअे अेक समिति नियुक्त की है, और अुसके कार्य-संचालनके लिअे निम्नलिखित नियम बनाये हैं:

१. **नाम:** अिस समितिका नाम 'भूदान-यज्ञ-समिति' होगा।

२. **सदस्य:** अिस समितिके सदस्य निम्नलिखित होंगे:

१. श्री अुमतल केशवराव वकील, बरकतपुरा-हैदराबाद;
२. ,, संगम लक्ष्मीबाअी, हैदराबाद;
३. ,, के० कोदंडराम रेड्डी, भोनगिर।

३. **संयोजक:** अिस समितिके संयोजक श्री अुमतल केशवराव होंगे।

४. **कार्यक्षेत्र:** समितिका कार्यक्षेत्र हैदराबाद राज्य होगा।

५. **अुद्देश्य:** (क) भूदान-यज्ञमें अभी तक प्राप्त हुअी भूमिका भूमिहीनोंमें बंटवारा करना; (ख) भू-स्वामियोंसे नये भूदान प्राप्त करना और अुस भूमिका भूमिहीनोंमें बंटवारा करना।

६. **बंटवारा:** (अ) सामान्यतया अेक परिवारको अेक अेकड़ तरी भूमि, या फी व्यक्ति अेक अेकड़ चेल्का (बिना सिंचाअीवाली) भूमि दी जा सकेगी। लेकिन स्थानिक परिस्थितिको देखते हुअे समिति अिसमें आवश्यक कमीबेशी कर सकेगी; (आ) जिस जमीन पर जो भूमिहीन किसान पहलेसे ही खेती करता होगा, वह जमीन सामान्यतः अुसी किसानको तकसीम करनेकी नीति रहेगी। अिसके अलावा दानमें प्राप्त भूमिके बारेमें कोअी झगड़ा हो, तो अुस सम्बन्धमें अुचित कार्यवाही करनेका अधिकार समितिको रहेगा।

७. अिस **समिति**को अपने कार्यकी पूर्तिके लिअे तथा जनताका सहकार हासिल करनेके लिअे आवश्यक कार्यवाही करनेका और सरकारसे या दूसरोंसे पत्रव्यवहार आदि करनेका अधिकार होगा।

८. **रेकार्ड:** दाताओंके नाम, अुनसे प्राप्त भूमि, बंटवारा की हुअी भूमि, जिनको भूमि दी गअी अुनके नाम, आदि आवश्यक रेकार्ड समिति अपने पास रखेगी।

९. **संयोजकका कार्य:** समय-समय पर, जरूरतके अनुसार, समितिकी बैठक बुलाना, अुसकी कार्यवाहीका रेकार्ड रखना, अुसके अनुसार कार्य करना, पत्रव्यवहार तथा अन्य सभी दफ्तरी कारोबार चलाना।

१०. अुपरोक्त कामोंमें तथा अुनके अतिरिक्त भी अिस भूदान-यज्ञ-समितिके सम्बन्धके अन्य सभी कामोंमें आवश्यकता अनुसार समय-समय पर **समिति** मेरी सलाहसे कार्य करती रहेगी।

२. विनोबाजी द्वारा प्रवर्तित अिस कामको जारी रखनेके लिअे कार्यकर्ताओंने मंचेरिआलमें ता० ८-६-'५१ को यह संकल्प लिया:

"सर्वोदय सम्मेलन मंचेरिआलमें अेकत्रित हुअे हम सेवक-जन संकल्प करते हैं कि पू० विनोबाजी द्वारा प्रारम्भ किये गये भूदान-यज्ञमें हम पूरी तरहसे अपना योग देंगे और अिसकी सामुदायिक सिद्धिके लिअे निरन्तर कोशिश करेंगे।"

३. अखिल हैदराबाद कांग्रेस कमेटीने भी विकाराबादमें ता० १५ जूनको हुअी अपनी बैठकमें यह प्रस्ताव पास किया:

"पूज्य विनोबा भावेने तेलंगानामें अपनी पैदल यात्राके दरमियान किसानोंकी भूमिकी समस्याअें सुलझानेमें जो बहुमूल्य सेवाअें की हैं, अुनके लिअे अखिल हैदराबाद कांग्रेस कमेटीकी यह सभा विनोबाके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करती है। अिस काममें अुन्होंने हिंसा और द्वेषके खिलाफ, जिसका प्रचार और व्यवहार कम्युनिस्ट करते हैं, प्रेम और अहिंसाके साधनका परिणामकारी प्रयोग किया। सभा हैदराबादकी जनतासे और खासकर कांग्रेस-कार्यकर्ताओंसे अनुरोध करती है कि वे विनोबाजीके अिस भूदान-यज्ञके कामको जारी रखें।"

(अंग्रेजीसे) दा० मूं०

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक : **किशोरलाल मशरूवाला**

अनु० : **सोमेश्वर पुरोहित**

कीमत १-१२-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

विषय-सूची

		पृष्ठ
शिवरामपल्लीमें विनोबा — ६	दा० मूं०	१८५
चरखा-संघके कुछ निर्णय		१८७
श्री मथुरादास त्रिकमजी	कि० घ० मशरूवाला	१८८
विनोबाकी पैदल यात्रा — १६	दा० मूं०	१८९
भूदान-यज्ञ	दा० मूं०	१९२

www.vinoba.in